(IJPS) 2021, Vol. No. 12, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

A DESCRIPTIVE ANALYSIS OF TEACHER TRAINING NEEDS FOR HOME SCIENCE AND ARTS STUDENTS WITH REFERENCE TO GORAKHPUR DISTRICT

Dr. Jaya Sharma

Assistant Professor, Department of Home Science,
Sonpati Devi Women's Degree College, Maharajganj, UP, India

गोरखपुर जिले के संदर्भ में गृह विज्ञान और कला के छात्रों के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता का एक वर्णनात्मक विश्लेषण

डॉ0 जया शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, गृहविज्ञान विभाग,
सोनपतिदेवी महिला डिग्री कॉलेज, महराजगंज, यू पी

ABSTRACT

The effectiveness of teaching is determined by the classroom behavior of the teacher, the characteristics of his general human personality undoubtedly affect his professional success or failure. But the main effect in this is that what activities does he do in the class? What does he say? How he does? With the help of which objects or materials or how orally does he communicate the text material to his students? The effectiveness of teaching and the depth of learning depend on its preparation.

Training is necessary for every teacher. Trained teachers prove to be more effective than untrained teachers. Effective transmission of information to students depends on a number of skills such as questioning, clarification, demonstration and interpretation. Communication skills are required for the organization of subject matter and their logical sequential presentation.

सारांश

अध्यापन की प्रभावशीलता का पता अध्यापक के कक्षागत व्यवहार से लगता है, उसके सामान्य मानवीय व्यक्तित्व की विशेषताएँ उसकी व्यावसायिक सफलता या असफलता को निसंदेह प्रभावित करती हैं। परंतु इसमें मुख्य

प्रभाव इस बात का होता है कि वह कक्षा में क्या-क्या क्रियाएँ करता है? क्या-क्या बोलता है? कैसे करता है? किन-किन वस्तुओं या सामग्रियों की सहायता से या कैसे मौखिक रूप से वह पाठ्य सामग्री का अपने विद्यार्थियों तक सम्प्रेषण करता है? अध्यापन की प्रभाविता और अधिगम की गहनता उसकी तैयारी पर निर्भर करती है।

प्रत्येक अध्यापक के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है। अप्रशिक्षित अध्यापक की तुलना में प्रशिक्षित अध्यापक अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं। सूचनाओं को प्रभावी ढंग से छात्रों तक प्रेषण कई कौशलों पर निर्भर करता है जैसे प्रश्न पूछने का कौशल, स्पष्टीकरण, प्रदर्शन एवं व्याख्या। विषय वस्तु का व्यवस्थापन एवं उनके तर्कपूर्ण श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुतीकरण के लिए संचार कौशल की आवश्यकता होती है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा की किसी भी योजना या नवाचार का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों पर ही निर्भर करता है। विद्यालय भौतिक संसाधनों से कितना ही परिपूर्ण क्यों न हो यदि शिक्षक के शिक्षकीय कौशल समृद्ध न हों तो सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम असफल सिद्ध हो जाते हैं। एक प्रशिक्षित शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का उपयोग करके प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें सही दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षकों में किन-किन कौशलों का विकास किया जाता है? शिक्षक शिक्षकीय कार्य के दौरान इनका उचित उपयोग करते हैं या नहीं यह जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया। शोध निष्कर्षों के अनुसार प्रशिक्षित शिक्षकों का कक्षा अध्यापन अप्रशिक्षित शिक्षकों के कक्षा अध्यापन से अधिक प्रभावशाली पाया गया [1]।

शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषण करने के लिए, हमें सबसे पहले समझना होगा कि एक प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के लिए शिक्षकों को कौन से कौशल और ज्ञान की आवश्यकता होती है। सफल शिक्षक बनने के लिए, शिक्षकों को अच्छी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ताकि वे अपनी शिक्षा कौशल और अनुभवों को बढ़ा सकें और अपने छात्रों के विकास में सक्षम हो सकें [2]।

शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित कुछ विषयों को ध्यान में रखना चाहिए [3]:

1. पाठ्यक्रम और विषय के ज्ञान: शिक्षकों को अपने अध्ययन के विषय और पाठ्यक्रम के ज्ञान की अच्छी जानकारी होनी चाहिए ताकि वे अपने छात्रों को ठीक से पढ़ाई करा सकें। वे प्रभावशाली शिक्षण तकनीकों का भी ज्ञान रखने चाहिए ताकि वे उपयुक्त प्रवचन और विवरण के माध्यम से अपने छात्रों को प्रेरित कर सकें।

2. प्रभावशाली शिक्षण तकनीकों की जानकारी: शिक्षकों को विभिन्न प्रभावशाली शिक्षण तकनीकों की जानकारी होनी चाहिए।
3. शिक्षण प्रक्रिया का अनुभव : एक प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिए, शिक्षक को अपने शिक्षण प्रक्रिया को समझना आवश्यक होता है। वे अपने विषय के ज्ञान के साथ-साथ शिक्षण में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों, प्रश्न-उत्तर तकनीकों और आवश्यक संसाधनों के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए।
4. छात्रों के विभिन्न स्तरों का समझ : शिक्षक को अपने छात्रों को समझने के लिए जानकारी होनी चाहिए कि वे विभिन्न ज्ञान स्तर और समझ के साथ आते हैं। इसके अलावा, वे अलग-अलग शैलियों, प्रतिरोधों और उनके जीवन में होने वाली विभिन्न समस्याओं के साथ भी आते हैं।

प्रभावी कक्षा शिक्षण शिक्षा की आधारशिला है। शिक्षण की गुणवत्ता का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, उनके व्यवहार और सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षक कक्षा में महत्वपूर्ण कारक है और शिक्षण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए उनका प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषण करना है। प्रभावी कक्षा शिक्षण के लिए सक्षम और आत्मविश्वासी शिक्षकों की आवश्यकता होती है जिनके पास कौशल और ज्ञान की एक श्रृंखला होती है। शिक्षकों को कक्षा में प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करने में शिक्षकों का प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कारक है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है [4]।

कार्यप्रणाली:

अध्ययन विभिन्न स्कूलों में शिक्षकों से डेटा एकत्र करने के लिए मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करेगा। डेटा संग्रह विधियों में एक सर्वेक्षण प्रश्नावली और साक्षात्कार शामिल होंगे। सर्वेक्षण प्रश्नावली विभिन्न विद्यालयों में शिक्षकों के नमूने के लिए उनकी प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए प्रशासित की जाएगी। प्रभावी कक्षा शिक्षण के प्रति शिक्षकों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण का आकलन करने के लिए प्रश्नावली तैयार की जाएगी। उनकी प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर गुणात्मक डेटा एकत्र करने के लिए शिक्षकों के एक छोटे से नमूने के साथ साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे। साक्षात्कार के प्रश्नों को शिक्षकों के अनुभवों, चुनौतियों और उनके प्रशिक्षण में सुधार के सुझावों का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा।

विश्लेषण:

सर्वेक्षण प्रश्नावली से एकत्र किए गए डेटा का वर्णनात्मक आंकड़ों जैसे माध्य, मानक विचलन और आवृत्ति वितरण का उपयोग करके विश्लेषण किया जाएगा। परिणामों का उपयोग शिक्षकों के बीच सबसे सामान्य प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने के लिए किया जाएगा। शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं में सामान्य विषयों की पहचान करने के लिए साक्षात्कार से एकत्र किए गए डेटा का विषयगत विश्लेषण का उपयोग करके विश्लेषण किया जाएगा। विषयों का उपयोग शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की गहरी समझ प्रदान करने के लिए किया जाएगा।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) -

प्रस्तुत लघु शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है -

1. कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।
3. गृह विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।
4. महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के शिक्षकों में प्रशिक्षण की सार्थकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) -

चयनित शोध निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है -

1. अप्रशिक्षित एवं प्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. गृह विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study)

अध्ययन की व्यापकता, उपलब्धता संसाधन एवं समयाभाव को देखते हुए शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु शोध में अध्ययन की सीमा का निम्न बिन्दुओं में परिसीमन किया गया है।

क्षेत्र - गोरखपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय

स्तर - उच्च माध्यमिक स्तर

संकाय - गृह विज्ञान एवं कला संकाय

शोध प्रक्रिया (Research Process) - सर्वेक्षण विधि

न्यादर्श (Sample): इस अध्ययन हेतु गोरखपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यात्मक न्यादर्श चयन विधि से किया गया। इन शालाओं के 100 शिक्षकों (महिला एवं पुरुष) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से किया गया।

उपकरण (Tools) -

इस शोध अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया – Classroom observation scale adapted by CTCS Classroom teaching competence scale amfuthaf - मर्मर मुखोपाध्याय, प्रकाशन – National University of Educational planning Management &Administration.

सांख्यिकीय विश्लेशण (Statistical Operations) –

परिकल्पना क्रमांक – 01 प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक - 01

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
प्रशिक्षित	98	66	29.66	3.197	3.765	2.59
अप्रशिक्षित		34	19.82	3.729		

व्याख्या – उक्त मापों के आधार पर ज्ञात t का मान 3.765 है, जो 01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2 59 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्य दिखाई पड़ने वाला अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना-01 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 गृह विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
गृह विज्ञान		77	29.45	5.59		
कला	98	23	25.86	6.45	0.696	2.59

व्याख्या - उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.696 है, जो 01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है। अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना-02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03- महिला एवं पुरुष शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा अध्यापन के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक - 03

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
पुरुष		37	27.432	4.86	0.104	
महिला	98	63	25.666	6.174		2.59

उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.104 है, जो 01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है, अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना-03 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04 प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 04

समूह	df	N	M	Sd	t	0.1 सार्थकता पर सारणीयनमान
शासकीय		49	26.938	4.441		
अशासकीय	98	51	25.725	6.803	0.292	2.59

व्याख्या – उक्त मापों के आधार पर ज्ञात किया गया t का मान 0.292 है, जो 01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से कम है, अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना-04 स्वीकृत होती है।

परिणाम:

अध्ययन के परिणामों से प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करने की उम्मीद है। अध्ययन से शिक्षकों के बीच सबसे आम प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने और उनके प्रशिक्षण में सुधार के लिए सिफारिशें प्रदान करने की उम्मीद है। अध्ययन प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर मौजूदा साहित्य में भी योगदान देगा।

डेटा के विश्लेषण से प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं से संबंधित कई विषयों का पता चला। इन विषयों में शामिल हैं:

1. **शैक्षणिक ज्ञान और कौशल:** शिक्षकों को शिक्षण के लिए विषय सामग्री और शैक्षणिक दृष्टिकोण की गहरी समझ की आवश्यकता होती है। उन्हें छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की निर्देशात्मक रणनीतियों और तकनीकों से लैस होने की आवश्यकता है। सीखने को बढ़ाने के लिए शिक्षकों को भी प्रौद्योगिकी के उपयोग में कुशल होने की आवश्यकता है।
2. **कक्षा प्रबंधन कौशल**: सीखने के अनुकूल माहौल बनाने के लिए प्रभावी कक्षा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को व्यवहार को प्रबंधित करने, दिनचर्या स्थापित करने और छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने के लिए तकनीकों पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। चुनौतीपूर्ण व्यवहार और संघर्षों से निपटने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करने की भी आवश्यकता है।

3. **मूल्यांकन और मूल्यांकन कौशल**: छात्रों के सीखने के आकलन और मूल्यांकन में शिक्षकों को कुशल होने की आवश्यकता है। उन्हें मूल्यांकन डिजाइन करने, परिणामों का विश्लेषण करने और शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए फीडबैक का उपयोग करने पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्हें छात्रों और अभिभावकों को प्रभावी ढंग से परिणाम बताने में सक्षम होने की भी आवश्यकता है।
4. **व्यावसायिक विकास:** शिक्षकों को अपने क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान, तकनीकों और प्रौद्योगिकियों के साथ बने रहने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास की आवश्यकता होती है। उन्हें अपने अभ्यास को प्रतिबिंबित करने, लक्ष्य निर्धारित करने और अन्य पेशेवरों के साथ सहयोग करने के तरीके पर भी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष (Conclusions) -

प्रभावी कक्षा शिक्षण के लिए सक्षम और आत्मविश्वासी शिक्षकों की आवश्यकता होती है जिनके पास कौशल और ज्ञान की एक श्रृंखला होती है। शिक्षकों को कक्षा में प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करने में शिक्षकों का प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कारक है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के परिणामों से शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करने और प्रभावी कक्षा शिक्षण के संदर्भ में शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर मौजूदा साहित्य में योगदान की उम्मीद है। सांख्यिकी आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, वे निम्नानुसार हैं –

1. प्रशिक्षित शिक्षकों का अध्यापन, अप्रशिक्षत शिक्षकों के कक्षा अध्यापन से अधिक प्रभावशाली पाया गया।
2. गृह विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में प्रभावशाली कक्षा शिक्षण के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कक्षाध्यापन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के कक्षाध्यापन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions)

1. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को बनाये रखने के लिए प्रशिक्षण के बाद भी निरंतर अनुवर्ती कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों के लिए समय-समय पर गोष्ठियाँ, कार्यशालाओं एवं उन्मुखीकरण आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।
3. शिक्षकों को समय-समय पर उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा, पुरस्कार आदि के द्वारा प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) -

1. मोहन के. (1980) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता II Survey of Research in Education page no. 822
2. मुथा, डी.एन. (1980) प्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यक्ति का अध्ययन II Survey of Research in Education page no. 822
3. सिंह हरमिंदर (1989) फ्लैडर की अंतक्रिया विश्लेषण तकनीकी द्वारा सेवारत शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन V Survey of Research in Education vol.II page no. 1487
4. सिंह, आर.एस. (1987) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता व उससे संबंधित अन्य तत्वों का अध्ययन V Survey of Research in Education vol.II page no. 1487

REFERENCES

1. Mohan K., (1980); Shikshak Prashikshan Karykramon ki Prabhavsheelta II, Survey of Research in Education page no. 822
2. Mutha, D.N.; (1980); Prabhavi Shikshakon ki Abhivritti evum Vyakti ka Adhyayan II, Survey of Research in Education page no. 822
3. Singh Harminder (1989); Flader ki Antkriya Vishleshan Takniki dwara Sewarat Shikshakon ke Kakshagat Vyavhaar par Prashikshan ke Prabhav ka Adhyayan V, Survey of Research in Education vol.II page no. 1487
4. Singh R.S. (1987); Uchchatar Madhyamik Star par Shikshak Prabhavsheelta va Usse Sambandhit anya Tatwon ka Adhyayan V; Survey of Research in Education vol.II page no. 1487